CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

विद्यालयी शौचालय एवं स्वच्छता संबंधित उपबंधों का शिक्षाशास्त्र सीखने की क्षमता को प्रभावित करता विद्यालयी 'शौचालय एवं स्वच्छता व्यवस्था'

अश्विनी कुमार 'सुकरात'
M.V. College of Education, University of Delhi
Email- ashwini.edu21@gmail.com, Mobile-9643273515

First draft received: 15.01.2024, Reviewed: 18.01.2024, Final proof received: 25.01.2024, Accepted: 29.01.2024

Abstract

'शिक्षा' और 'अनियोजित शहरी बस्तीकरण' : दिल्ली की एक 'अनधिकृत' बसावट का अध्ययन, विषय पर किये जा रहे शोध के फिल्ड वर्क, प्रतिभागी और गैर-प्रतिभागी अवलोकनों, चलते-फिरते की जाने वाली बातचीत, समूह चर्चा एवं विशेष साक्षात्कारों के दौरान, बच्चों एवं अभिभावकों के विद्यालयी शिक्षा हेतु किये जाने वाले जद्दोजहद संबंधित अनुभवों को रिकोर्ड करने के क्रम में विद्यालयी शौचालय एवं स्वच्छता संबंधित कथानक एक नृविज्ञानी अध्ययन के दौरान निजी विद्यालयों की स्थिति में दंभ के साथ तो, सरकारी विद्यालयों की स्थिति में झिझक, शर्म और पीड़ा के साथ उभर कर सामने आये। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों और उनके अभिभावकों ने बातचीत के क्रम में बताया कि बच्चे उनके बच्चे 5-6 घंटों तक मुत्रत्याग की इच्छा को दबाते हैं। निसंदेह यह स्वास्थ्य को प्रभावित करने के साथ व्यक्तित्व और सीखने की क्षमता को भी प्रभावित कर रहा है। साथ ही, स्वच्छता संबंधित सामाजिक मूल्यों को भी।

मुख्य-शब्द : *शौचालय, स्वच्छता, स्वास्थ्य, मुत्र त्याग एवं शौच इच्छा का सीखने पर प्रभाव आदि.*

परिचय

राष्ट्रीय विद्यालय स्वच्छता मैनुअल, 2011 के प्राकथन हैं, "राष्ट्रीय स्कूल स्वच्छता पहल के तहत, स्कूलों विद्यार्थियों में व्यक्तिगत स्वच्छता की उचित आदतों का विकास करने हेतु सुरक्षित पेयजल और हाथ थोने की आदतों का विकास किया जाएगा । साथ ही अपशिष्ट (मल) के पृथक्करण एवं अपशिष्ट जल के उचित निपटान के लिए लड़कियों-लड़कों के लिए अलग-अलग स्वच्छ शौचालय तक पहुंच को सुनिश्चित करने के लिए जोर भी दिया जाएगा।" (National School Sanitation Manual, 2013)पर, 'शिक्षा' और 'अनियोजित शहरी बस्तीकरण' : दिल्ली की एक 'अनधिकृत' बसावट का अध्ययन, विषय पर किये जा रहे शोध के फिल्ड वर्क, प्रतिभागी और गैर-प्रतिभागी अवलोकनों, चलते-फिरते की जाने वाली बातचीत, समूह चर्चा एवं विशेष साक्षात्कारों के दौरान, बच्चों एवं अभिभावकों के विद्यालयी शिक्षा हेतु किये जाने वाले जद्दोजहद संबंधित अनुभवों को रिकोर्ड करने के क्रम में विषय से संबंधित अनेकों पक्षों में से सबसे पीड़ादायक पक्ष, झिझक, शर्म और पीड़ा के बीच से उभर कर आया, वह था – **'विद्यालयी शौचालय एवं स्वच्छता संबंधित उपबंधों'** का। इस पक्ष ने, न केवल निजी और सरकारी विद्यालयों के मध्य अपितु अनियोजित शहरी बस्ती के सरकारी विद्यालय और नियोजित शहरी बस्ती के सरकारी विद्यालयों के बीच भी विभाजन रेखा को खींचने का काम किया। साथ ही, यह बिन्दु सरकारी स्कूलों के शिफ्ट और प्रकार से भी प्रभावित होता पाया गया। हर प्रकार के विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने विद्यालय की स्वच्छता संबंधित उपबंधों के अनुभव अलग-अलग प्रकार के रहे। एक ही प्रकार के विद्यालयों के बीच अनुभवों में अन्तर आया, परन्तु वह विभाजक नहीं रहा। विद्यालयी शौचालय एवं स्वच्छता संबंधित उपबंधों, इसलिए भी महत्वपूर्ण पाये गये क्योंकि यह न केवल विद्यालय के दाखिले को प्रभावित कर रहा था। अपितु विद्यालय में उपस्थिति और प्रभावपूर्ण सीखने के साथ स्वास्थ्य के स्तर के और स्वच्छता

से जूड़े सामाजिक सम्मान के भाव को भी। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21A के तहत शिक्षा ही नहीं, सर्वोच्च न्यायालय के विभिन्न निर्णयों में शिक्षा के साथ स्वास्थ्य और स्वच्छता तीनों ही जीवन जीने के मौलिक अधिकार अनुच्छेद 21 का अनिवार्य घटक माना है। परन्तु विद्यालयी अधोसंरचना एवं व्यवस्था संबंधित अनुभवों का यह पक्ष इन तीनों ही मौलिक अधिकारों को प्रभावित करता हुआ पाया गया। इस विषय पर कुछ बच्चों और अभिभावकों के अनुभव तो, इतने पीड़ादाय थे कि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चे और उनके अभिभावक तो इस विषय पर फट पड़े, तो कुछ निजी विद्यालयों में अपने बच्चों को न पढ़ा पाने की आत्मग्लानि के साथ, अपनी मजबूरी को व्यक्त कर रहे थे। तो, कुछ सरकारी विद्यालय में ही पढ़ाने के साथ जुडी अनिवार्यता के रूप में इसे स्वीकार कर रहे थे । सरकारी विद्यालयों के शिक्षक तो इस विषय को अपने कार्य क्षेत्र से ही बाहर का बता रहे थे और कुछ तो इस सब का दोषारोपण विद्यार्थियों के मथे ही मड़ रहे थे। साथ ही, इसी प्रकार, निजी विद्यालय के प्रबंधक, इसे विद्यालय के स्टेटस के साथ भी जोड़ रहे थे। इस विषय से संबंधित विद्यार्थियों और अभिभावकों के अनुभवजन्य साक्ष्य भी एक बार में नहीं, बल्कि कई-कई बार की बात-चीत में धीरे-धीरे, अन्य विषयों पर किये सवालों के जवाब के बीच से ही उभर कर सामने आये। जिन्होंने इस विषय के आगे की बातचीत को बल प्रदान किया। सामाजिक संरचनाओं की वजह से बच्चियों/लड़कियों से शौचालय और विशेषतः महवारी के दिनों के अनुभव को पूछ पाना, एक पुरुष अनुसंधानकर्ता के लिए संभव ही नहीं था। इसलिए इन अनुभवों को उकेरने के लिए पुरुष अनुसंधानकर्ता को अपनी महिला सहयोगी (पत्नी) का सहयोग भी लेना पड़ा। इस लेख में हम बच्चियों/लड़कियों के साथ हुई बातचीत के पक्ष को प्रस्तुत करेंगे।

इस विषय को लेकर, जब निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों से साक्षत्कार के उद्देश्य से बात-चीत की गयी तो, लगभग सभी ने विद्यालय की साफ-सफाई पर संतोष जाहिर किया । यहाँ तक की इस विषय पर जब 'अनधिकृत-अनियोजित शहरी बस्ती' से दूर स्थित एक नियोजित शहरी बस्ती के एक महंगे बजट के निजी स्कूल में पढ़ने जाने वाले एक बच्चे से पूछे गये सवाल पर उस बच्चे के अभिभावक, जो पेशे से इंजिनीयर हैं, ने खिन्नता प्रकट करते हुए हस्तक्षेप किया,

> "हमें तो लगा था कि आप स्कूल और पढ़ाई लिखाई के बारे में सवाल करने वाले हो। और शिक्षक विद्यार्थियों के शौचालयों में क्यों जाए? सफाई करना तो सफाईकर्मी का काम है और इसकी निगरानी रखना स्टेट मैनेजर का काम है, न कि शिक्षकों का । इसका पढाई-लिखाई से क्या लेना देना।"

जब उन्हें समझाया गया कि **सिर्फ पढ़ाई ही नहीं, किस वातावरण में पढ़ाई हो रही है, यह भी महत्वपूर्ण है।** तब उसने विद्यालय की शौचालय व्यवस्था को उसने खुद गर्व के साथ प्रस्तुत किया और उसके बच्चे ने पीछे-पीछे हामी भरी। इसी क्रम में, 'एक नियोजित शहरी बस्ती के एक महंगे बजट के निजी स्कूल में पढ़ने वाली 9वीं कक्षा की एक अन्य बच्ची, जिसके पिता एक बड़े व्यापारी और माता उच्च शिक्षा प्राप्त घरेलू महिला हैं, ने अपने विद्यालय की सफाई के स्तर की तुलना एक पांच सितारा होटल से करते हुए बताया,

> *"हमारे यहाँ पीने के पानी की उचित व्यवस्था है। शौचालय भी साफ रहते हैं। यदि गंदे भी हो तो, शिकायत करने पर तुरंत सफाई हो जाती है। विद्यालय में स्थाई तौर पर सफाई कर्मचारी तैनात रहते हैं। खुद से भी थोड़ी-थोड़ी देर में सफाई करते है। रिसैस(अर्ध अवकाश) के बाद तो अनिवार्यतः। हाथ धोने के लिए भी हैंडवास/साबुन की व्यवस्था भी है। फर्स पर नियमित पौछा लगता है।अर्ध-अवकाश के समय तो हम लगभग वाशरूम जाते ही हैं। इसके अलावा भी हमें जब भी जरूरत महसूस होती है। हम वाशरूम चले जाते है। महावारी के दिनों में, बहुत ज्यादा पेट दर्द हो तो अलग बात है, नहीं तो नियमित सिनैटरी पैड बदलने की आवश्यकता की वजह से हम छुट्टी नहीं करते, बल्कि आवश्यकता हो तो, आराम से वाशरूम या मैडिकल रूम में जाकर बदल लेते हैं। क्लासरूम और कैरिडोर की नियमित सफाई होती रहती है। पूरे स्कूल परिसर में कही भी कूड़े का ढ़ेर नहीं ढूंढ सकते।"*

कुछ ऐसी ही प्रतिक्रिया अन्य उच्च दर्जे के स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों से भी प्राप्त हुई। यहाँ तक कि इस बिन्दु को लेकर 'अनधिकृत-अनियोजित शहरी बस्ती' के ही निम्न कोटी के निम्न बजट स्कूलों में भी असंतोष नहीं था। दोनों में अंतर शौचालयों का कुल क्षेत्रफल को लेकर भर था। जहाँ महंगे बजट वाले उच्च दर्जे के स्कूल में क्षेत्रफल ज्यादा था । वहीं निम्न दर्जे के कम बजट के विद्यालयों में जगह के अभाव की वजह से शौचालय का क्षेत्रफल कम था । साथ, महंगे बजट वाले उच्च दर्जे के स्कूलों में शौचालयों में एगजोश पंखों की व्यवस्था की रिपोर्ट की गयी। जो निम्न दर्जे के स्कूलों में अपवाद स्वरूप ही चालू अवस्था में देखी गयी। साथ ही इन स्कूलों में से कुछ स्कूलों में शौचालयों का कम क्षेत्रफल और हवा अच्छे से पास न होने की स्थिति में हल्की दुर्गंध की स्थिति पायी गयी। 'अनधिकृत-अनियोजित शहरी बस्ती' के स्कूलों के अवलोकन के क्रम में, एक निम्न बजट के एक निजी स्कूल के प्रबंधक ने उनके विद्यालय में कम स्थान होने के बावजूद अपने स्कूल के शौचालयों के रख रखाव को दिखाते हुए, बिल्डिंग के पुरानें हिस्से में हर मंजिल पर शौचालय भी दिखाए और नए बने हिस्से में हर क्लासरूम के साथ 'अटैच्ड टॉयलेट' की व्यवस्था तक दिखाया। उन शौचालयों की स्वच्छता बनाये रखने के लिए किये गये प्रबंधों को भी दिखाया और साथ ही इस कार्य में लगाये गये सफाई कर्मियों से भी मिलवाया। उन्होंने अपने स्कूल की स्वच्छता का दावा करते हुए कहा,

"हमारे यहाँ कही भी शौचालय में आपको दाग-धब्बा तक नहीं मिलेगा और न ही दुर्गंध। हमने हर शौचालय में दुर्गंधनाशक लगवा रखे हैं और साफ-सफाई के संदर्भ में कर्मचारियों को सख्त आदेश दे रखें हैं। मैं खुद भी शौचालयों का निरक्षण करता हूँ। बच्चों को भी शौचालय के इस्तेमाल के बाद फ्लस करने का प्रशिक्षण दिया जाता। मैं खुद मिशन के रूप में शौचालय की स्वच्छता को लेता हूँ।"

आर.डी स्कूल की प्रबंधिका सह मुख्याध्यापिका ने बताया,

"मैं शौचालय की सफाई स्कूल के सफाईकर्मियों के भरोसे नहीं छोड़ती। आवश्यकता पड़े तो, मैं खुद ही शौचालयों तक की सफाई भी करती हूँ। पीटीएम में अभिभावकों को छोटे बच्चों को साफ-सफाई कैसे रखनी है, के निर्देश जारी किये जाते है।"

अन्य स्कूलों (इलाइट स्कूल, बी ब्लॉक, साहू इंटरनेशनल स्कूल, इ ब्लॉक, एम आर पब्लिक स्कूल) ने भी हर मंजिल पर शौचालय एवं उन शौचालयों की स्वच्छता को दिखाया गया और साथ ही बताया कि सफाई कर्मियों के अतिरिक्त छोटे बच्चों के टॉयलेट के पास हमेशा एक 'आया' रहती ही है। एम आर पब्लिक स्कूल के मुख्याध्यापक ने बताया,

"हमारे स्कूल में हर साइज के बच्चों के दो जोड़े कपड़े रखे जाते हैं। यदि कोई बच्चा पेशाब जैसी नित्यक्रिया के दौरान अपने कपड़े गंदे कर देता है तो, उसे हम वह पहना देते है। बाद में, उसके माता पिता को बुला कर उसके गंदे कपड़ो को दे दिया जाता है। हालांकि माता-पिता से स्कूल के कपड़े धो कर वापस करने के लिए भर कहा जाता है। ताकि अगली दफा किसी और बच्चे के इस्तेमाल में आ सकें। पर मातापिता उसे धोने के साथ प्रेश भी कर वापस करते हैं।"

जब इस बात का स्पष्टिकरण प्राप्त करने हेतु अभिभावकों से बातचीत की गई तो एक अभिभावक जिसके बच्चे आरडी स्कूल में पढ़ते हैं ने बताया,

"एक बार मेरी बच्ची ने स्कूल में कपड़ों में ही शौच कर दिया। स्कूल से फोन कर बुलाया गया तब दौड़ कर गई और उसके कपड़े बदले। साथ ही, उस जगह की सफाई भी की। जब तक मैं पहुँची नहीं मेरी बच्ची वही स्कूल के शौचालय में उसी हालत में खड़ी रही। पास का स्कूल था तो तुरन्त मैं पहुँच गयी। यदि दूर का होता तो, फिर क्या हालत होती।"

इसी प्रकार दो अन्य निजी स्कूलों (एस आर स्कूल, A-3 ब्लॉक,) में अर्ध अवकाश के समय शौचालय के पास विद्यार्थियों की भीड़ दिखी। वास्तविक स्थिति दावों के अनुरूप नहीं थी। उस दौरान शौचालय थोड़ा गंदा ही था। पर, अर्ध अवकाश के तुरंत बाद उसकी सफाईकर्मियों द्वारा सफाई भी की गयी। नियमित तौर पर सफाई की वजह से अर्ध अवकाश की भीड़ छटने के बाद सफाई कर दी गयी । अवलोकित किये गये 13 कम बजट के स्कूलों में से किसी में भी शौचालयों की स्थिती चिंताजनक स्थिति में नहीं थी। निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का इस विषय पर बात-चीत के क्रम में किसी प्रकार का तीव्र असंतोष नहीं नजर आया। कुछ ने स्वीकार किया कि बहुत छोटे बच्चों की स्थिति में स्कूल वाले कपड़े बदल देते हैं और कुछ ने इस मामलों में इनकार किया। कुल मिलाकर निजी स्कूल नियोजित बस्ती का उच्च दर्जे का हो या अनधिकृत-अनियोजित शहरी बस्ती के अंदर का निम्न दर्जे का, दोनों ही प्रकार के स्कूलों में शौचालय से संबंधित रखरखाव को लेकर अभिभावक और बच्चों द्वारा 'संतोष' की स्थिति ही जाहिर की गयी। लगभग सभी ने रिपोर्ट किया कि प्रतिदिन छुट्टी के बाद सभी प्रकार के निजी स्कूलों में डस्टिंग होती है। डस्टिंग और शौचालयों की साफ-सफाई का एक कारण सभी निजी स्कूलों चाहे वे नियोजित शहरी बस्तियों के हो या अनधिकृत-अनियोजित शहरी बस्तियों के, सबका एक ही पाली में चलना भी था। जो उन्हें दो-दो पाली में चलने वाले सरकारी स्कूलों से तुलनात्मक तौर पर बेहतर स्थिति में रखता था। इन विद्यालयों को छुट्टी के बाद और अगले दिन स्कूल लगने से पूर्व साफ-सफाई करने/करवाने के लिए प्रयाप्त समय भी होता है। पर दिल्ली की अनिधिकृत अनियोजित बस्तियों और उसके आसपास के सरकारी विद्यालय, जो दो-दो पालियों में चलते हैं, उनमें यह कार्य चुनौतीपूर्ण हो जाता है। जिसका वर्णन हम आगे करेंगे।

स्वच्छता संबंधित सरकारी विद्यालयों के अनुभव

सरकारी विद्यालयों के स्वच्छता संबंधित अनुभव विद्यालयों से विद्यालय बदल रहे थे। अनधिकृत-अनियोजित शहरी बस्ती के प्राथमिक विद्यालयों में उसी बस्ती के उच्च विद्यालयों के मुकाबले भी शौचालय की स्थिति बहुत ही ज्यादा दयनीय स्तर पर पाई गई । मौनिया विहार और हरेराम कॉलोनी के प्राइमरी स्कूल बिल्डिंग में बच्चों ने शौचालय के दरवाजे के आसपास ही शौच कर रखा था। जब हरेराम कॉलोनी के प्राथमिक स्कूल के मुख्य अध्यापक से इस विषय पर बातचीत हुई तो उन्होंने बताया,

"एक तो विद्यालय के शौचालय की क्षमता और हकीकत में विद्यालय में दाखिल विद्यार्थियों की संख्या में बहुत बड़ा अन्तर है। शौचालय की क्षमता विद्यालय की स्थिति के आदर्श के अनुरूप है। अर्थात जितने विद्यार्थियों के हिसाब से विद्यालय की इमारत को डिजाइन किया गया है। जबकि हकीकत में विद्यालय में क्षमता से पांच गुना अधिक विद्यार्थी विद्यालय में दाखिल हैं। अब आप प्रति विद्यार्थी 2 मीनट का समय भी रखों तो, यदि सभी विद्यार्थी दिन में एक बार जाए तो, सुबह क्लास लगने से दोपहर में छुट्टी तक विद्यालय के सभी विद्यार्थी नहीं निपट सकते। क्लासरूम एक कोने में हैं और शौचालय दूसरे कोने में, ऐसे में बरसात के दिनों में बच्चों का शौचालय तक पहुँचना भी दुभर हो जाता है। इस कार्य के लिए अलग से आया का भी प्रावाधान नहीं है। कोई शिक्षिका सहायता करना भी चाहे तो अपनी क्लास छोड़, बच्चों के साथ शौचालय तो जा नहीं सकती है । पुरूष सफाईकर्मियों को बच्चों के रहते, शौचालय में अंदर जाने

> की इज्जाजत नहीं है। अधिकारियों से मांग की गयी उन्होंने फिलहाल महिल सफाईकर्मी उपलब्ध करने में असमर्थता जताई है। बच्चे शौचालय में अकेले जाने से डरते हैं इसलिए कुछ बच्चें इधर-उधर, गेट के पास ही शौचालय की फर्श पर भी शौच कर आते हैं। सुबह 7:30 बजे स्कूल लगने की वजह से बहुत से बच्चे घर से फ्रेश होकर भी नहीं आते। अब या तो पूरे दिन इसी तरह बैठे रहते हैं या फिर उसी में जाते हैं। इस स्थिति में कोई बच्चा कपड़े गंदे कर ले तो, फिर हमे उसके अभिभावकों को ही बुलाना पड़ता है। ऐसी स्थितियों के लिए हमारे पास कोई अलग से व्यवस्था नहीं है।"

हरेराम कॉलोनी के शौचालय को देखने से प्रतित हुआ कि स्कूल के बाद ही सही यहाँ कम से कम एक बार सफाई तो होती ही होगी। इस कारण यहाँ की स्थिति संतोषजनक न सही, भयावह नहीं थी । पर, चार बार के विद्यालयी अवलोकन के दौरान मौनिया विहार के शौचालय की स्थिति को खौफनाक स्थिति तक गंदा पाया गया । वहां शौचालय में कई-कई दिनों का मल जम कर सुख चुका था । पेशाब और मल की नियमित सफाई न होने की वजह से पूरे शौचालय में जगह-जगह काली काई जैसी संरचना जम गयी थी। जो बच्चें शौचालय जाते भी दिखे, वे उस जमा मल को लांघ कर ही मल-मूत्र जैसी नैसर्गिक नित्य क्रियाओं को करने को मजबूर थे । इसके अतिरिक्त मौनिया विहार प्राथमिक स्कूल बिल्डिंग में ग्राउंड फ्लॉर पर झाड़ू पौछा न भी हुआ हो, पर कम से कम कचरा ज्यादा नहीं बिखरा हुआ था। पर, दूसरे और तीसरे फ्लॉर पर जगह-जगह कचरा बिखरा हुआ था। इसमें भी दूसरे से ज्यादा कचरा तीसरे फ्लोर पर था । मतलब फ्लोर के साथ कचरे की मात्रा भी बढ़ रही थी। जब इस संदर्भ में स्कूल के इंचार्ज से बात की गयी तो उन्होंने विषय पर असमर्थता जताते हुए कहा,

> "सरकार की तरफ से इन सब कामों के लिए कोई अलग से प्रावाधान नहीं है। दोनों शिफ्टों के लिए दो कर्मचारी एमसीडी की तरफ से मिले हैं। वे आते नहीं हैं और उनपर हमारा सीधा नियंत्रण नहीं है। 'इंचार्ज' भर होने की वजह से मेरी 'पॉवर' भी पूरी नहीं है। तो, कोई कार्यवाही भी नहीं कर सकता। कोई बाहर से अधिकारी आता है तो मुझें ही बोल कर चला जाता है।"

उन्होंने एक पाईप के बंडल को दिखाते हुए बताया कि सफाई के लिए यह पाईप भी हम शिक्षक आपस में पैसा जमा कर ही लाये हैं। एक अन्य शिक्षक ने विद्यार्थियों पर दोषारोपण करते हुए कहा,

> "यहाँ के बच्चे ऐसे परिवारों से आते हैं, जहाँ साफ सफाई पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता। यहाँ तक कि बहुत से बच्चे तो घर से फ्रेस होकर भी नहीं आते। शौचालय जाते भी हैं तो, इधर-उधर ही शौच कर आते है। पेशाब जाने वाले विद्यार्थी भी शौचालय में इधर उधर ही पेशाब कर आते है। अब शिक्षक ये आदते तो सीखाएगा नहीं। यहाँ का तो, माहौल ही खराब है। मैं तो खुद ट्रान्सफर लेने के प्रयास में हूँ।"

जिस क्लास में खड़े होकर वे यह बात कर रहे थे, उसके आसपास कचरे के ढेर पड़े हुए थे। सूचना अधिकार अधिनियम के तहत मिली जानकारी के अनुसार 2 एमसीडी कर्मचारी और अन्य कर्मचारी प्राथमिक स्कूलों में तैनात हैं। पर, अलग-अलग समयों में साथ किये दौरे में स्थिति जस की तश मिली और कोई भी कर्मचारी कार्य पर नहीं दिखा।

अभिभावकों की प्रतिक्रिया

जब अनधिकृत-अनियोजित शहरी बस्ती, मौनिया विहार और हरेराम कॉलोनी के प्राथमिक विद्यालय एवं उच्चविद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों और अभिभावकों से जब इस विषय पर बात की गयी तो इस समस्या का एक दूसरा ही पक्ष उभर कर सामने आया। लॉकडाउन में नौकरी चले जाने के पश्चात इलाके में छोटी दूकान चलाने वाले अभिभावक ने अपनी मजबूरी और पीड़ा जाहिर करते हुए बताया,

> "सबसे ज्यादा दिक्कत शौचालय की है। शौचालय इतने ज्यादा गंदे हैं कि मेरी बच्ची स्कूल में शौचालय जाती ही नहीं हैं। पेशाब को रोकने की वजह से उसके पेट में दर्द हो जाता है। घर आते ही, पेशाब करने के लिए सबसे पहले शौचालय ही भागती है। गंदगी की वजह से बच्चे बार-बार बीमार पड़ जाते हैं। दस्त-वस्त लग जाते हैं। बार-बर शौच आये तो, बच्चों की छुट्टी करवानी पड़ती है। बच्ची स्कूल जाने से भी हिचकती है। सरकारी स्कूल में शिक्षक तो खुब पढे लिखे हैं। पर शौचालय और साफ-सफाई के नाम पर कुछ भी ठीक नहीं। अब दूकान थोड़ा जम जाये तो आस पास के किसी निजी स्कूल में बच्चे का दाखिला करवाएंगे। निजी स्कूलों के शिक्षक तो कम पढ़े लिखे होते हैं। पर वहाँ साफ सफाई तो रहती ही है। बच्ची स्कूल से प्यासी तो नहीं आयेगी और पेशाब आने पर रोकने को मजबूर तो, नहीं रहेगी।"

अपने अभिभावक (माँ) के विचारों में अपने विचार मिलाते हुए बच्चे ने कहा,

> "शौचालय के साथ स्कूल में पीने के पानी की भी समस्या है। पानी साफ नहीं और पीने के पानी के नलके के पास पानी और गंदगी पसरी रहती है। जिस कारण बच्चे फिसल कर गिर भी जाते है। नल के पास खाने पीने की गंदगी भी फैली रहती है। जिसकी नियमित सफाई न होने से उस पर कीड़े लग जाते हैं। स्कूल में मीड डे मील तो मिलता है। पर साफ पानी नहीं मिलता। बच्चे खाने के साथ मीड-डे मील बिखेर देते हैं। जो स्कूल में जगह-जगह फैला रहता है। सबसे ज्यादा पीने के पानी के नल के पास। उस पर पांव पड़ने से कई बच्चे गिर भी जाते है।"

अपने बच्चे की बात को आगे बढ़ाने के क्रम में अभिभावक (माँ) ने बताया,

> "घर से बच्चा एक बोटल पानी लेकर जाता है। आप खुद सोचें? वह पानी कब तक चलेगा। पीने का पानी, कच्चा

> बर्मे वाला होता है। पीने के पानी की जगह भी गंदगी भरी रहती है। अब पीने के पानी के स्थान पर गंदगी तो नहीं होनी चाहिए। पर, पीने के पानी के स्थान पर भी शौचालय जैसी ही स्थिति है। वही पर झुठा वही पर गंद, सब फैला रहता है। बच्चा स्कूल में न पानी पी पाता है, न शौचालय जा पाता है, पर स्कूल में बच्चों के पोषण के लिए 'मीड-डे मिल' मिलता है। इतनी गंदगी में भी क्या तो खाया जाए। पर, बच्चों को कहाँ समझ है, वे तो खा लेते ही है। इस कारण आये दिन बीमार पड़ते हैं।"

इस बात की पुष्टि अन्य विद्यार्थियों और अभिभावकों ने भी किया और बताया कि उनके बच्चे जितना संभव हो, अपने शौच और मुत्र त्याग की इच्छा को रोकने का प्रयास ही करते है। बस मजबूरी में ही शौचालय जाते हैं। घर आकर अपने अभिभावकों से शिकायत करते हैं। एक बच्ची जो विद्यालय के नल पर पानी पीने के दौरान फिसल कर गिर गयी। गिरने से उसके हाथ की हड्डी टूट गयी। जब अनुसंधानकर्ता ने उससे बातचीत कर स्थिति समझनी चाही तो उसकी माता जी ने यह कह कर मना कर दिया कि कही आपने जाकर स्कूल में कह दिया तो, हमारे लिए नई मुसीबत खड़ी हो जाएगी। जहाँ तक जनप्रतिनिधियों का सवाल है, स्थानीय सांसद, विधायक छोड़ पार्षद तक को इस स्कूल की पढ़ाई और साफ सफाई से कोई मतलब नहीं है। साल छः महीने में जब किसी बड़े अधिकारी या स्थानीय पार्षद को आना होता है, तो उसकी सूचना पहले ही दे दी जाती है। उस दौरान स्कूल में सफाई करवा दी जाती है। एसएमसी सदस्य ने बताया कि हर स्कूल की एसएमसी में विधायक की तरफ से एक प्रतिनिधि होता है। पर, हमारे क्षेत्र के विधायक ने अपना एक भी प्रतिनिधि इलाके के किसी भी स्कूल में नहीं भेजा।

उच्च माध्यमिक विद्यालय की स्थिति का अवलोकन

मौनिया विहार के उच्च माध्यमिक विद्यालय की साफ सफाई की व्याख्या करते हुए एक अभिभावक ने बताया,

> "इस स्कूल में कचरा अब उस तरह नहीं फैला होता । जिस तरह आज से 10 साल पहले फैला रहता था। पर अब भी यहाँ के शौचालयों में भी साफ-सफाई का तो अभाव है। शौचालय में मल फर्श पर तो नहीं, पर सही से फ्लस न होने की वजह से शौचालयों की सीटों के अंदर जमा मिल जाता है और कुछ में पानी के बहाव में रूकावट की वजह से शौचालय की सीट के ऊपर तक आ जाता है।"

लडकियों के विद्यालयों के एच.ओ.एस. ने बताया,

> "इस विद्यालय में 5500 से ऊपर छात्राएं का दाखिला है और लगभग इतने ही शाम की शिफ्ट में लड़को के स्कूल में दाखिले है। लगभग 10,000 बच्चे प्रतिदिन इस विद्यालय भवन में बैठते हैं। यह संख्या विद्यालय भवन की क्षमता से कहीं ज्यादा है। अब जहाँ इतने बच्चे एक साथ बैठेंगे तो, कुछ कमी बेशी तो रहेगी ही।"

इस बात की पुष्टी लड़को के विद्यालय के प्राचार्य ने भी की। उच्च माध्यमिक स्कूल में भी ठेके के कर्मचारियों की तैनाती थी। पर, उसके बवजूद भी शौचालयों की स्थिति दयनीय थी। हाँ क्लासरूम और कैरीडोर की स्थिति, इस शोध को प्रारंभ करने से 10 साल पहले किये अवलोकन से कुछ हद तक संतोष जनक थी। पर, क्लासरूम और कैरीडोर में जगह-जगह कचरा बिखरा हुआ मिला। साफ-सफाई के मुद्दे पर जब सुबह के लड़कियों के शिफ्ट की एसएमसी सदस्य (सामाजिक कार्यकर्ता) से बात की गयी तो उन्होंने इसके लिए बच्चों का ही दोष गिनवाया। और पानी के आरों के लिए शाम की शिफ्ट के स्कूल के लड़कों पर खराब करने का आरोप लगाया। पर, जब पूछा गया कि वे बच्चियों के शौचालय में गयी हैं तो, उन्होंने मना कर दिया। समूह वार्ता में जब शिक्षकों से बातचीत की गयी तब उन्होंने बताया कि उनका शौचालय अलग है तो, इस कारण उन्हें बच्चों के शौचालय में जाने की आवश्यकता ही क्यों? वैसे भी साफ-सफाई की व्यवस्था को देखना स्टेट मनेजर का काम है।

नवीं कक्षा में पढ़ने वाली बच्ची जिसके पिता दिहाड़ी पर मकान मिस्त्री का काम करते हैं और भाई सब्जी की रेडी लगाने का काम करता था। उसके इस कार्य में उसकी माता के साथ, वह भी स्कूल से आने के बाद सहयोग करती है। देखने में पूरी तरह से स्वस्थ होने के बावजूद, उसने साक्षात्कार के उद्देश्य से की गयी बातचीत में बताया, "वह बीमार होने की वजह से महीने में दो-तीन दिन छुट्टी कर लेती है।" जब इस का स्पष्टिकरण मांगा तो, इसके तार विद्यालय की शौचालय व्यवस्था से जुड़े और शौचालय व्यवस्था को स्पष्ट करते हुए उसने बताया,

> "हमारे स्कूल का शौचालय इतना गंदा रहता है कि वहां जाने की कल्पना भर से मन घीना जाता है। सिर्फ गंदगी के अलावा, वहाँ कुछ नहीं होता। अलबत्ता तो हम सुबह घर से निकलते वक्त पेशाब इत्यादि करके जाते हैं और दोपहर को आने के बाद ही दोबारा पेशाब करते है। कभी गलती से जाना भी पड़े तो, मन इतना विचलित हो जाता है कि आने के बाद उबकाई सी आती रहती है। महावारी के दिनों में मैं अक्सर इस कारण छुट्टी भी कर लेती हूं। क्योंकि उसे टाइम पर पैड को बदलने के लिए, टॉयलेट आदि में जाना पड़ जाता है। गंदे पैड इत्यादि, को डालने के लिए भी सही जगह नहीं होती, जिस कारण लड़कियां वहीं (शौचालय) में ही साइड पर डाल देती है और वह गंदगी को और ज्यादा फैलती है।"

इस बच्ची की बातों का पुष्टिकरण करते हुए उसकी माँ ने भी कहा,

> "सुना है, डॉक्टर भी बताते है कि महावारी के दिनों में सफाई का विशेष ध्यान रखना होता है। महावारी के दिनों में बच्ची को स्कूल भेजें और वहाँ की गंदगी से बीमारी (संक्रमण) हो जाए। तो, कहां इलाज कराते फिरेंगे। अब स्कूल वाले पढ़ा सकते है। पर, बीमारी हो जाए तो इलाज हमें ही कराना पड़ेगा । इसने बताया वहाँ शौचालय में गंदगी रहती है। तब मैंने ही कही उन दिनों में स्कूल न जाया कर। इससे पढ़ाई का तो

नुकसान होता ही है। पर, शरीर चलेगा, जिन्दगी रहेगी तब ही तो पढ़ाई भी काम आयेगी।"

कुछ इसी तरह का वर्णन अन्य किशोर उम्र की लड़कियों ने किया। एक लड़की ने तो यहाँ तक बताया,

"मेरा सेनेटरी पैड़ एक बार शौचालय के फर्श पर गिर कर गंदा हो गया। जिस कारण मुझें तब तक शौचालय में ही इंतजार करना पड़ा, जब तक कोई दूसरी लड़की ने आ कर मुझें सेनेटरी पैड़ न दे दिया। **स्कूल में लड़कियों को सेनेटरी पैड़ तो उपलब्ध करवाया जाता है। पर, उसे लगाने और बदलने के लिए अलग से चंगिंग-रूम की व्यवस्था नहीं है।** इसके अतिरिक्त विद्यालय की दीवारों पर अभद्र गालियों और अश्लिलता की बौछार है। जिसे पढ़ कर शर्मिदगी महसूस होती है।"

इन सभी समस्याओं पर न तो शिक्षकों का ध्यान है और न ही प्रशासन का। पर, यह सब बच्चे के आत्मसम्मान के भाव को तो प्रभावित कर ही रहा हैं और यह गिरता आत्मसम्मान हीन भावना और झुझलाहट को बढ़ा रहा है और यह दोनों, आगे सीखने के आत्मविश्वास को। पर, जब नियोजित बस्तियों के सरकारी स्कूलों के संदर्भ में जब पूछा गया तो जवाब मिलेजूले आये। एक बच्ची जो पहली से पांचवी कक्षा तक मौनिया विहार निम्न कोटी के निम्न बजट के स्कूल में पढ़ी, छठी-सातवीं कक्षा मौनिया विहार के सरकारी विद्यालय में पढ़ी और आठवीं कक्षा में सरकारी कर्मचारियों के लिए बसी नियोजित कॉलोनी के सर्वोदय कन्या विद्यालय में हस्तांतरण ले लिया और नवीं कक्षा में उसका दाखिला विशेष श्रेणी में आने वाले एसओएसइ विद्यालय में हो गया। अपने इन सभी विद्यालयों के साथ के अनुभवों को साझा करते हुए बताया,

"कॉलोनी के निजी स्कूल में इतनी गंदगी तो नहीं होती थी पर, कई बार जब कोई अंदर होता था तो इंतजार करना पड़ता था। वहाँ हर फ्लोर पर शौचालय थे। पर, उनका क्षेत्रफल सरकारी के मूकाबले छोटा था। गंदगी होने पर शिकायत करने पर तुरंत ही सफाई भी हो जाती थी। जब हम छोटे थे तो आया, आंटी भी हमारी हैल्प कर देती थी। पर, एक बार जब मैंने स्कूल में शौच कर दिया तो, मुझें तब तक इंतजार करना पड़ा, जब तक मेरी मम्मी नहीं आ गयी। जब छठी कक्षा में मौनिया विहार के सरकारी स्कूल में गयी तो, उस समय कोविड की वजह से स्कूल में क्लासे नहीं चला करती थी । तब कभी-कभी, मतलब हफ्ते दो हफ्ते में एक बार वर्कशीट लेने और जमा कराने सरकारी स्कूल जाते थे। उस दौरान एक आध बार जब शौचालय जाना हुआ तो, उस वक्त वहाँ गंदगी नहीं होती थी। फिर लॉकडाउन खतम होने के बाद जब सातवीं में उसी स्कूल में गये तो, वह शैचालय जो लॉकडाउन में साफ सुथरा रहता था, गंदा रहने लगा। सिर्फ शिक्षिकाओं के शौचालय में ही सफाई मिला करती थी। मेरी कोशिश यही रहती थी कि विद्यालय में शौचालय पेशाब करने न जाऊं और इसके लिए मैं विद्यालय में पानी भी कम पीती थी। पर, जब काफी रोकने पर भी नहीं रोक पाती तो, हमारी पहली कोशिश शिक्षिकाओं के शौचालय में घुसने की होती थी। मैं और मेरी सहेली कभी-कभी जब काफी तेज पेशाब आया करता तो, हम चुपके से शिक्षिकाओं वाले शौचालय में चले जाते थे। पर, एक बार पकड़े गये तो, हमारी काफी डाट पड़ी । उनके शौचालय में साफ-सफाई के साथ एक बड़ा सा आईना भी लगा हुआ करता था। आठवीं में जब यहाँ मालरोड(नियोजित कॉलोनी) वाले सरकारी स्कूल में दाखिला लिया तो, मौनिया विहार के स्कूल के मुकाबले यहां थोड़ी ज्यादा सफाई मिली। कभी-कभी गंदा रह जाने की स्थिति को छोड़ दें तो, अमूमन सुबह तो शौचालय पूरी तरह से साफ ही होता था। पर दिन बढ़ने के साथ गंदगी बढ़ जाती । सफाई वाली आंटी बार-बार सफाई नहीं करती और न ही प्रचार्या ही उन्हें ऐसा करने को कहती। लड़कियों के शौचालय की स्थिति जांचने कोई शिक्षिका नहीं जाती। पी.टी.आई. मैम को बता दो तो, वे आगे हमारी बात पहुँचा तो देती थी। पर, उनसे डर कर हर बच्चा बोल नहीं पाता था। सुबह जल्दी आने के चक्कर में जो बच्चे सुबह घर से शौच नहीं कर के आते, वे स्कूल में शौच करते थे और कई बार जब शौचालय में पानी नहीं होता या उन बच्चों की आदत पानी डालने की नहीं होती तो, वे गंदा ही छोड़ देते थे। कोई टीचर या आंटी ऐसे बच्चों को समझाती नहीं थी। निजी स्कूल की तरह बार-बार सफाई नहीं होती । स्कूल के बाद सफाई होती होगी। तब ही, शौचालय सुबह-सुबह साफ मिलता था। यहाँ हर फ्लोर पर शौचालय हैं। परंतु फिर भी, शौचालय में थोड़ी बहुत गंदगी होती रहती ही है। टीचर के शौचालय यहाँ भी अलग ही थे। जिसमें सफाई ज्यादा रहती थी। कभी -कभी हम यहाँ पर भी शिक्षकों के शौचालय में चले जाते और पकड़े जाने पर यहाँ पर भी डांट पड़ती। पर, उनके शौचालय में न जा सकें तो, गंदगी की स्थिति में हमारी कोशिश पेशाब को रोकने की ही होती थी। मौनिया विहार वाले स्कूल में तो, मैं शौचालय जाती ही नहीं थी। कभी-कभी जब तेज पेशाब लगता था तो, स्कूल से निकलने के बाद, स्कूल के बगल में रहने वाली अपनी सहेली के घर पेशाब कर, घर आती थी। मालरोड वाले स्कूल में कभी-कभी मौका देख कर, शिक्षिकाओं के शौचालय नहीं भी जा पाऊ तो, बड़े बच्चों के शौचालय में चली जाती थी। उनके शौचालय की स्थिति हमसे बेहतर थी। पर, दोनों स्कूलों में, बहुत कम ही पेशाब करने जाती थी। अब जब से सिविल लाइन वाले एसओएसइ स्कूल में दाखिला हुआ है। मुझें जबर्दस्ती पेशाब की इच्छा को दबाने की जरूरत नहीं पड़ती। यहाँ के शौचालय काफी साफ सुथरे हैं। जब भी जरूरत होती है, मैं तब यहाँ चली जाती हूँ।"

इस मसले पर एक बच्ची के अभिभावक मौनिया विहार के सरकारी स्कूल के मुख्याध्यापक से शिकायत करते हुए लिखा,

> "स्कूल के टॉयलेट में साफ सफाई की समस्या काफी गंभीर है। यह समस्या बच्चों की पर्सनल हाइजीन और स्वास्थ्य के स्तर से भी संबंधित है। बच्चों को कहना है कि स्कूल का टॉयलेट गंदा ही रहता है। दिन बढ़ाने के साथ गंदगी बढ़ जाती है। स्कूल के टॉयलेट में पानी की समस्या भी है। जिस कारण, बच्चे टॉयलेट का इस्तेमाल करने के बाद फ्लस नहीं कर पाते। इस कारण वह और गंदा हो जाता है । जिस कारण बहुत से बच्चों को वहां टॉयलेट करने की इच्छा ही नहीं होती। लड़कियों ने बताया कि वे कोशिश करती है कि स्कूल में टॉयलेट ही ना करें। और अपनी टॉयलेट करने की इच्छा को भी दबा कर रखती हैं। जो पुनः खतरनाक है और कई बीमारियों को जन्म दे सकता है।"

इसके जवाब में मुख्याध्यापक ने सिर्फ विद्यालय के पक्ष का बचाव भर किया और कहा,

> "हमारे स्कूल में इस विषय पर व्यक्तिगत रूचि लेती हूँ। हमारे यहाँ नियमित सफाई होती है। पर, सफाई के बाद बच्चे गंदा कर देते हैं। इनमें से अधिकतर बच्चे अशिक्षित कॉलोनियों से आते हैं। जहाँ उन्हें टॉयलेट का प्रशिक्षण ही नहीं दिया जाता। हम तो असेम्बली में भी बहुत कहते हैं। पर कोई सुनता ही नहीं है। 5500 बच्चों में किस-किस की निगरानी रखें।

निष्कर्ष

इस प्रकार ऊपर के अनुभवों में हमने देखा, कि निजी स्कूल चाहे वे नियोजित कॉलोनियों के महंगे बजट - उच्च स्तर के हो या अनियोजित कॉलोनियों के कम बजट - निम्न स्तर के हो, स्वच्छता बिल्कुल बेहतर न भी हो, नहीं तो, संतोषजनक जरूर है। पर, सरकारी स्कूलों के स्वच्छता संबंधित अनुभव स्कूलों के स्तर, स्कूलों की शिफ्ट, मुख्यमार्ग से संपर्क और शिक्षा विभाग के क्षेत्रीय कार्यालय से दूरी के आधार पर बदल रहे हैं। इसके अतिरिक्त यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह स्कूल अनधिकृत-अनियोजित-शहरी बस्ती, अधिकृत-नियोजित-शहरी बस्ती में से किस बस्ती में स्थित है और उसके अधिकांश बच्चे किस आर्थिक -सामाजिक वर्ग से हैं और विद्यालय में बच्चों की संख्या कितनी है। साथ ही, प्रचार्य की खुद की नेतृत्वशैली किस प्रकार की है। जहाँ एसओएसइ विद्यालयों की व्यवस्था दुरुस्त है, वहीं व्यवस्थित कॉलोनियों के विशेषतः एक शिफ्ट के स्कूलों में व्यवस्था ठीक-ठाक, वहीं अनियोजित कॉलोनियों और वे स्कूल जहाँ अधिकतर इन कॉलोनियों के बच्चे जाते हैं, साथ ही मुख्य मार्ग से कटे होने की वजह से अधिकारियों द्वारा नियमित निगरानी भी नहीं रखी जा सकती, वहाँ की व्यवस्था खस्ताहाल है।

नियमावली के तहत शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए एक ही शौचालय और पीने के पानी की व्यवस्था रखने के निर्देश के बावजूद, शिक्षकों के शौचालय और पीने के पानी व्यवस्था विद्यार्थियों से भिन्न होने के कारण शिक्षकों की व्यक्तिगत दिलचस्पी विद्यार्थियों के शौचालय से पैदा नहीं हो पा रही है। सिर्फ विद्यार्थियों की संख्या ही नहीं, प्रचार्य, प्रशासन का तठस्थ होना, एसएमसी सदस्यों का इस मुद्दे को लेकर मुखर न होना और अभिभावकों-विद्यार्थियों में शिकायत दर्ज करने की चेतना का अभाव शौचालय की व्यवस्था को प्रभावित कर रहा है। निजी विद्यालयों में यह व्यवस्था चर्मराई नहीं दिखती क्योंकि एक तो निजी विद्यालय के प्रबंधक उसे अपनी व्यक्तिगत संपत्ति के तौर पर देखते हैं। दूसरा, स्वच्छता से जुड़े कर्मचारियों जैसे शौचालय की सहायक आया, झाड़ू-पौछा आदि और शौचालयों की सफाई करने वाले कर्मचारियों का असंगठित तौर पर कम आय पर मिल जाना भी निजी स्कूलों के पक्ष में है। जबकि सरकारी स्कूलों को सरकार के मानदंड़ों के भीतर ही कार्य करने विवसता है। छोटे बच्चों के शौचालय में सहायक आया का अभाव, प्रयाप्त सफाई कर्मियों का अभाव और उन पर नियंत्रण न होना भी सरकारी विद्यालयों की स्वच्छता की स्थिति को प्रभावित कर रहा है। साथ ही व्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार की वजह से जितने कर्मचारी नियुक्त किये जाते हैं, वे जमीन पर कार्य करते हुए नबीं दिखते। सबसे, बड़ा भारतीय समाज की जातिगत मूल्य स्वच्छता से जूड़े कार्यों को जाति विशेष से जोड़ कर देखते हैं। अभी भी हमारे अंदर जापान की तरह का साहस नहीं है। जिस कारण हम जापान की तरह स्वच्छता के कार्यों में विद्यार्थी और शिक्षकों को मिल कर सफाई करने और स्वच्छता के मूल्य को विकसित करने का साहस नहीं पैदा कर पाए है।

स्वच्छता से उत्पन्न होने वाली बीमारियाँ के परिणाम तुलनात्मक तौर पर तुरंत प्रकट नहीं होते हैं। अन्य कारकों के पीछे खड़ी उन्हें बल प्रदान करती हैं। ये बीमारियाँ न केवल बीमार होने वाले को पीड़ा पहुँचाती है, बल्कि सम्पूर्ण परिवार और समाज को कष्ट की स्थिति में लाने के साथ, आर्थिक रूप से भी नुकसान भी पहुंचाती हैं। यह समस्या उन शासकीय स्कूलों में भी गंभीर हो सकती है, जिनमें सुरक्षित पेयजल, हाथ धोने योग्य पानी-साबुन और स्वच्छ शौचालयों की सुविधाओं और का अभाव है। लड़के और लड़कियों की शारीरिक संरचना में अंतर की वजह से शौचालय की पर्याप्त उपलब्धता एवं स्वच्छता का अभाव ने लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को अधिक प्रभावित करता पाया गया। इस कारण इस बिन्दु पर प्रस्तुति के दौरान अनुसंधानकर्ता ने लड़कियों के अनुभवों को प्रमुखता दी। दस्त या शौच की स्थिति में लड़के और लड़कियों दोनों की अनुपस्थिति समान है। पर, लड़कों ने गंदगी की शिकायत तो की और गंदगी की वजह से पेशाब को दबाया, ऐसा केस सामने नहीं आया। जहाँ वे शौचालय की गंदगी की वजह से 4-6 घंटे तक पेशाब की इच्छा को दबाये हो। निसंदेह लम्बे समय तक पेशाब को रोकना घातक है। जिसका घातक परिणाम किडनी और पेशाबजनित अन्य बीमारियों में प्रणित हो सकता है। इस बिन्दु पर अलग से चकित्सकीय शोध करने की जरूरत है। इसी प्रकार लड़कों को लड़कियाँ की तरह महीने के कुछ दिन सिनेटरी पैड न बदल पाने की असुविधा की वजह से भी कक्षाओं से अनुपस्थित नहीं रहना पड़ता। इस प्रकार,

स्वच्छता सुविधाओं की अपर्याप्तता का स्कूलों में लड़कों से ज्यादा, लड़कियों की दीर्घकालिन नियमित अंतराल पर अनुपस्थिति का सीधा प्रभाव प्रकट होता पाया गया। जो, अन्तः नियमित अंतराल पर अनुपस्थिति को सामान्य नियम के रूप में स्थापित कर देता है। जो, उन्हें अन्तः नियमित शिक्षा से काट देता है। जो अंततः विद्यालयी शिक्षा से दूर जाने में परिणीत कर सकता है। साथ ही पेशाब रोके रकने की स्थिति में बच्चों का ध्यान कक्षा के सामान्य शिक्षण में भी नहीं रह सकता। कक्षा शिक्षण के दौरान उन्हें जल्द से जल्द घर जा कर मुत्र त्याग का ही ख्याल रहता है।

अब इस स्थिति की तुलना यदि जापान के स्कूलों से करें तो पाते हैं कि जापान वहां "शौचालय सुविधाओं, पानी की व्यवस्थी और स्वच्छता संबंधित अन्य पहलुओं की दैनिक निगरानी शिक्षकों द्वारा रखी जाती है। साथ ही, विद्यार्थियों की स्वास्थ्य समिति जागरूकता बढ़ाने में मदद कर रही और विद्यार्थियों की सौंदर्यीकरण समिति द्वारा दैनिक शौचालय की सफाई की जिम्मेदारी उठाती है।" (Sugita, 2022)जापान में शिक्षकों के नेतृत्व में विद्यार्थी अपनी कक्षाओं और स्कूल के शौचालयों को स्वयं साफ करते हैं। "जापान में छात्रों द्वारा अपनाई जाने वाली सफाई प्रथाएं, स्वच्छता और स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के साथ उन्हें आदर्श नागरिकों के रूप में विकसित करने के लिए उनके चरित्र का निर्माण करने में मदद करता हैं। अपने स्कूल को साफ रखना, जापानी विद्यार्थी अपने जीवन और संस्कृति के एक हिस्से के रूप में देखते हैं। स्वच्छता के मूल्य, साफ सफाई के कार्य को घृणा से देखने नहीं देता और उन्हें अधिक जिम्मेदार नागरिक बनाता है।" (Students in Japan clean their own classrooms and school toilets and the reason is incredible, 2017) पर भारत में जातीय संरचना की वजह से, स्वच्छता, विशेषतः शौचालय स्वच्छता के कार्य को हेय दृष्टि से माना जाता है। विद्यार्थी, शिक्षक, प्रशासक आदि स्कूल के शौचालयों के उपयोगकर्ता हैं और उपयोग करने के बाद दौबारा देखना भी नहीं चाहते। सफाई की जिम्मेदारी सफाई कर्मचारियों की है। निजी विद्यालयों की स्थिति में प्रबंधक, केयरटेकर, प्रचार्य/मुख्याध्यापकों और सरकारी विद्यालयों की स्थिति में प्रचार्य/मुख्याध्यापकों, प्रशासकों की जिम्मेदारी इन सफाईकर्मियों से कार्य लेने की है। फलस्वरूप सफाई की स्थिति इनकी सतर्कता पर निर्भर करती है। चुकी निजी विद्यालय के प्रबंधक स्कूल की संपत्ति पर एक निजी हक मानते हैं। अतः वे इसके रख-रखाव में, जिसमें शौचालय और स्वच्छता भी शामिल है, व्यक्तिगत रूचि लेते हैं। जबकि सरकारी विद्यालयों की स्थिति बिल्कुल भिन्न हो जाती है। वहाँ की शौचालय और अन्य जगहों की स्वच्छता का स्तर इस बात पर निर्भर करता है कि वह स्कूल सरकार की प्राथमिकता में कहाँ टिकता है। उस स्कूल में कितने विद्यार्थी हैं और वह कितने शिफ्टों में चलता है। उस स्कूल के मख्यमार्ग के माध्यम से सम्पर्क कितना संभव है, शिक्षा विभाग के प्रशासकों द्वारा उसका निरक्षण किया जाता है या नहीं और अन्तिम स्कूल मुख्याध्यापक/इंचार्ज/, एसएमसी सदस्यों का शौचालय और साफ-सफाई को लेकर रवैया क्या है। साथ ही, स्कूल में मिले प्रभावपूर्ण सफाईकर्मियों की स्थिति और उनसे काम लेने का तरीका भी साफ-सफाई की स्थिति को प्रभावित करता है। स्वच्छ भारत- स्वच्छ विद्यालय अभियान के तहत हर विद्यालय को स्वच्छ बनाना है। पर, स्वच्छता के मापदंडों को कठोरता से लागू करने और स्कूल के शिक्षकों-प्रचार्यों को व्यक्तिगत वास्ता जोड़े बिना इस लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता।

References

(2013). *National School Sanitation Manual.* Delhi: Ministries of Urban Development & Human Resource Development.

Students in Japan clean their own classrooms and school toilets and the reason is incredible. (2017, May 7). *India Today Web Desk*. Retrieved from https://www.indiatoday.in/education-today/featurephilia/story/students-in-japan-clean-their-own-classrooms-and-school-toilets-and-the-reason-is-incredible-1227619-2018-05-06

Sugita, E. W. (2022). Water, Sanitation and Hygiene (WASH) in Japanese elementary schools: Current conditions and practices. *Pediatrics International' Special issue - School Health Promotion in Japan and its Contribution to Asia andAfrica*. doi:https://doi.org/10.1111%2Fped.15062